09.08.21, S.B. Choudhary Sec-102
TOPIC - G.H. Mead : Explain Symbolic Interaction theory

स्व की अवस्थाएँ

मीड ने स्व को दो अवस्थाओं में देखा है। पहली अवस्था मैं (I) की है। यह मैं सावयव का विशुद्ध रूप है। यह 'स्व' तो मनमाने ढंग से अपनी क्रियाएँ करता है। नवजात शिशु का स्व की दूसरी अवस्था मेरा मुझे (Me) की है। इस अवस्था में 'स्व' दूसरे से सीखता है।

स्व परस्पर क्रिया

जब बाहरी समाज के मूल्य, मानक, भूमिका और प्रस्थिति स्व की दुनिया में पहुँचते हैं तब स्व और बाहर की दुनिया के बीच में वाद-विवाद और अन्त:क्रियाएँ होती हैं और इसी अन्त:क्रिया की प्रक्रिया में अपने आप प्रतीकों की सूची का आकार बढ़ता जाता है। इस प्रकार दूसरे लोगों के अनुभवों को स्व लेता है और इस प्रकार स्व के अनुभवों का खजाना निरन्तर बढ़ता रहता है।

स्व का विकास

जैसे-जैसे बच्चा अपने विकास की अगली अवस्थाओं में पहुँचता है भूमिका ग्रहण करने की प्रक्रिया लम्बी और जटिल होने लगती है। इसके साथ ही प्रतीकों की सूची भी बड़ी हो जाती है। आगे चलकर व्यक्ति जिस समाज का सदस्य होता है। उसके मानक, मूल्य, भूमिकाएँ और प्रस्थितियों को अपनाने लगता है। स्व के विकास की यह कहानी वस्तुत: मीड के प्रतीकात्मक अन्त:क्रियावाद का मूल आधार है।

प्रतीकात्मक अभिप्राय

संकेत (प्रतीक) एक प्रकार का संकेत है। हम दाँत दबाकर, भौहें चढ़ाकर और मुट्ठी बाँधकर दूसरे की ओर झपटते हैं, तो यह निश्चित रूप से आक्रमण करने का संकेत है। इनकी विशेषता यह है कि समाज के सभी सदस्य प्रतीक का एक या समान अर्थ निकालते हैं। प्रतीक हटा लीजिए मनुष्य पत्थर की मूरत बन जाएगा न कोई उनमें अर्थ होगा और न कोई मनोभाव।